International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2016; Page No. 05-07

मोहनलाल महतो 'वियोगी' का कवि रुप

कादम्बिनी मिश्रा, डॉ रमेश कुमार गोहे

शोधछात्रा, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

प्रस्तावना

मोहनलाल महतो वियोगी जी ने छायावाद की प्रवृतिगत, भावगत एवं भाषागत विशेषताओं से परिपूर्ण रचनाओं के द्वारा साहित्य जगत की सेवा की है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में छायावादी कवियों की श्रृंखला में 'वियोगी' जी का नाम स्मरण किया है।

शिवपूजन सहाय, हरिमोहन झा और अच्युतानंद दत्त के संपादन में पुस्तक भंडार लहेरियासराय (दरभंगा) में 1942 ई. में एक हजार बारह पृष्ठों में सचित्र प्रकाशित जयंती स्मारक ग्रंथ में अनेक स्थलों पर मोहनलाल महतों वियोगी का संक्षिप्त उल्लेख है।

"वियोगी जी के गद्य में कवि कल्पना का चमत्कार ठौर–ठौर बड़ा मनोरम मिलता है इन्होंने कहानियों एवं संस्मणों में कहीं गंभीर और कहीं सरल शैली की छटा दिखाई पड़ती है।"**1** इसी पुस्तक में आगे लिखा है– "श्री मोहनलाल महतो वियोगी हिन्दी संसार के प्रतिष्ठित साहित्यकारों में हैं। आपने कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, आलोचना, निबंध सभी कुछ लिखे हैं और बड़ी खूबी से लिखे हैं। आप सहृदय और अनुभवी कथाकार हैं। कथा साहित्य को आपकी देन है रेखा, रजकण,..... आपकी कहानियों में कवित्व का आनंद भी मिलता है।"**2** विपुल गद्य–साहित्य के सृजन के बावजूद वियोगी जी कवि रुप में याद किए जाने की इच्छा रखते थे।

साहित्य की अमरता जन–जीवन से जुड़ने में है। मानव मन के भीतर उठने वाली युग–चेतना को नकारने पर कवि की रचना धर्मिता या तो स्वयं को या तो युग को पीछे छोड़ देती है। वियोगी जी का उदय जिस संक्रमण काल में हुआ था वह भारतीय पराधीनता का युग था। उस युग में भारत देश को पराधीनता से मुक्त करना कवि धर्म था। जैसा की कवि ने स्वयं कहा है –

"देश पराधीन है
मैं गी गांऊ प्रेम के
ऐसे कवि और कविता को
धिक्कार है।"**3**

वियोगी जी ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत ब्रजभाषा से की थी। आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में बहुत से ऐसे कवि हुए जिन्होंने ब्रजभाषा पर अपनी लेखनी पहले चलायी बाद में वे खड़ी बोली में रचना करने को प्रेरित हुए। "इस प्रसंग में रोचक उदाहरण मिलता है जयशंकर प्रसाद का, जो ब्रजभाषा की काव्य–पाठशाला में पढ़कर तब खड़ी बोली की ओर उन्मुख हुए।"**4** चित्राधार उनके ब्रजभाषा के काव्य संकलन का नाम है, जबकि 'कानन कुसुम' पहली खड़ी बोली की उनकी रचना है। वियोगी जी भी इसके अपवाद नहीं थे। वे छविनाथ नाम से ब्रजभाषा में समस्यापूर्तियाँ करते थे। निर्माल्य के प्रथम संस्करण में 'शरत राका' नाम से प्रकाशित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं –

फैलि चली प्रभा शारदी त्यों
दीपन पारद मैं दरसाये
चांदनी स्वच्छ की स्वच्छता तैं
विधि विष्णु तथा भव भी भरमाये
पै सकलंक विलोकि स्वयं
निशिनाथ महा–मन में दुःख पाये।
दै कर मध्य गवाच्छन सों
तब राधिका ते छवि मांगन आये।**5**

वियोगी जी के समकालीन कवि खड़ी बोली में रचनाएँ करना प्रारंभ कर चुके थे। लेखक सामयिक स्वर के साथ बोलता है तो समय भी लेखक के स्वर में बोलता है। लेखकीय दायित्व को वही लेखक सही मायने में समझता है जो समय से ग्रहण करता है। इस समय का साहित्य एक नवीन भाषा में अभिव्यक्ति की मांग कर रहा था। "ब्रजभाषा से खड़ी बोली के रुपांतरण बिंदु पर हिन्दी कविता में तीन वैशिष्ट्य सहसा उभरते हैं– श्रृंगार की मानसिकता के स्थान पर राष्ट्रीय भावना का विकास आगे चलकर जिसे प्रसाद ने मानो प्रतीकात्मक विधान में कहा : बीती विभावरी जाग री! के माध्यम से दूसरे परंपरागत देव–वंदना के स्थान पर देश वंदना, और फिर प्रचलित विधान की जगह बिंब प्रयोग अर्थात् भावक की कल्पना के संचरण के लिए अधिक अवसर।"**6** इन्हीं परिवर्तनों के अनुरुप "रीतिकालीन कविताओं की सीमाओं के बंधन तोड़कर व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा करती हुयी, हिन्दी की आधुनिक कविता प्रारंभ में एक उल्लासपूर्ण दृष्टिकोण लेकर उद्‌भूत होती है और एक नवोत्थित वर्ग के भ्रमों की सृष्टि करती हैं रुढ़ि, रीति, आचार, नीति के बंधनों से उन्मुक्त हो वह नए समाज के नए बंधनों का अनुभव करती है और किस प्रकार वह जीवन की विडम्बनाओं असमर्थताओं और विफलताओं के प्रति असंतोष के भावना की अभिव्यक्ति करती है किस प्रकार व्यक्तिवाद का उसमें प्राबल्य हो उठता है। और उसके फलस्वरुप उसमें निराशा, पराजय, और आत्मसमर्पण के भाव मुखरित हो उठते हैं।..... पुनः कुछ कवि कविता के सौन्दर्यगत दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन कर उसको पुनः सामाजिक जीवन के संवेदनों की अभिव्यक्ति बना रहे हैं।"**7**

आधुनिक कविता में छायावाद के द्वन्द्वात्मक स्थिति का विश्लेषण करते हुए शिवदान सिंह चौहान लिखते हैं – "पल्लव के पंत और यामा की महादेवी तथा, निशा निमंत्रण और एकांत संगीत के बच्चन और पल्लव के पंत और युगवाणी तथा ग्राम्या के पंत में जो भेद हैं वह हिन्दी कविता के इस दो मुखी विकास का इतिहास है।"**8**

इस दो मुखी विकास के क्रम में वियोगी जी का प्रथम काव्य–संकलन निर्माल्य विशुद्ध छायावादी कोटि में रखा जा सकता है जबकि उनका महाकाव्य आर्यावर्त सामाजिक सरोकारों से सीधा जुड़ा हुआ है।

छायावादी प्रवृतियों से परिपूर्ण 'निर्माल्य' में संकलित प्रस्तावना शीर्षक कविता की पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

"होता है गंभीर निशा में जब प्रारंभ तुम्हारा गान
ताल ताल पर विश्व कांप उठता है थर थर हे गुणवान।
बुन देती हो तुम तानो का जटिल जाल सा चारो ओर
मैं नीरव वीणा को रखकर हो उठता हूँ मत विभोर।"9

इन पंक्तियों को देखकर महादेवी के निहार की पंक्तियों का स्मरण सहज ही हो जाता है –

गए तब से कितने युग बीत हुए कितने दीपक निर्वाण
नहीं पर मैंने पाया सीख तुम्हारा सा मनमोहन गान
नहीं अब गाया जाता देव है थकी अंगुलियां ढीले तार
विश्व वीणा में अपनी आज मिला लो यह स्फुट झंकार

उल्लेखनीय है कि निहार का प्रकाशन वर्ष 1930 ई. है जबकि निर्माल्य का प्रकाशन वर्ष 1925 ई. है।
छायावादी युग के कवियों पर रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताओं के प्रभाव की बात हमेशा की जाती है। छायावादी कविता रवीन्द्र नाथ की भाव छाया को ग्रहण कर बहुत आगे तक जाती है जो इसकी अपनी एक मौलिक विशेषता है। इस काल की कविता रवीन्द्र बाबू के भावों को ग्रहण करते हुए नई चेतना और नए जागरण का संदेश लेकर आती है। गीतांजली की पंक्तियाँ हैं –

"शरत ऋतु में आज मेरे प्राणों के द्वारा पर
कौन अतिथि आया है ?
हे हृदय ! आनंद–गान गा, आनंद गान गा।
नीले आकाश का नीरव संकेत,
आज अपनी वीण को तार–तार से ध्वनित होने दे
धान्य के खेतों में स्वर्णगीत चल रहा है,
उसके स्वर–में–स्वर मिलाकर गा।
भरी हुयी नदी के स्वच्छ जल प्रवाह
से अपनी स्वर झंकार तरंगित होने दे।"10

इन पंक्तियों के साथ वियोगी जी की पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

"उठा एकतारा है कवि। गा दे ऐसा मनमोहन गान,
विश्व देव के युग–युग का हो भग्न अचानक दुस्तर
ध्यान।"11

वियोगी जी ने अपनी प्रथम काव्य कृति 'निर्माल्य' की भूमिका में लिखा है – यह गीतांजली के टक्कर का है, ऐसा कहने का हमें कोई अधिकार नहीं है।" निर्माल्य, गीतांजली के टक्कर का हो या न हो, किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि वियोगी जी ने रवीद्र नाथ के प्रभाव को ग्रहण कर अपने नवीन दृष्टिकोण से लिखा है। वयोगी जी ने 'समुद्र और तरी' को संसार और जीवन का प्रतीक मानकर हृदय की मार्मिक अनुभूतियों को रहस्यात्मक ध्वनियों में चित्रित किया है।

"जाना है अज्ञात सिंधु पार कर
भ्रम से मैं चढ़ गया हाय इस जीर्ण तरी पर
कूल नहीं देखा, खोया इसकी जीवन भर
इसकी गति पर ही मेरा भविष्य निर्भर।
भुजाऐ थक गयी, क्या करुं हे हरि बांह पसारिए।"12

छायावाद के सभी कवियों में अपने अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रबल आकर्षण मुखर होकर सामने आया है। प्रसाद जी लिखते हैं –

शशि मुख पर घुंघट डाले
अंचल में दीप छिपाए,
जीवन की गोधूली में
कौतूहल से तुम आए।

महादेवी के गीत हैं –

रजत रश्मियों की छाया में धूमिल घन सा वह आता
या फिर पंत की
प्रथम रश्मि का आना रंगिणि
तूने कैसे पहचाना।

इस आकर्षण के विषय में स्वयं महादेवी वर्मा ने स्पष्ट किया है– "छायावाद का कवि धर्म के अध्यात्म से अधिक दर्शन के ब्रह्म का ऋणी है जो मूर्त और अमूर्त विश्व को मिलाकर पूर्णता पाता है। बुद्धि के सूक्ष्म धरातल पर कवि ने जीवन की अखण्डता का भावन किया, हृदय की भावभूमि पर उसने प्रकृति में बिखरी सौन्दर्य की रहस्यमयी अनुभूति प्राप्त की और दोनो को मिलाकर एक ऐसी काव्य सृष्टि उपस्थित कर दी जो प्रकृतिवाद, हृदयवाद, अध्यात्मवाद, रहस्यवाद आदि अनेक नामों का भार संभाल की।"13
तत्कालीन समाज की पृष्ठभूमि में इस मानसिक स्थिति को समझाते हुए महादेवी लिखती हैं– "जागरण के प्रथम चरण में हमारी राष्ट्रीयता ने अपनी व्यापकता के लिए जिस अध्यात्म का आह्वान किया, काव्य ने सौन्दर्य–काया में उसी की प्राण प्रतिष्ठा कर दी। कवि ने धर्म के धरातल पर किसी विकृत रुढ़ि को स्वीकार नहीं किया परंतु सक्रिय विरोध के साधनों का अभाव सा रहा।"14
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की आवश्यकताएं एवं छायावादी कवियों की रहस्यवादी प्रवृति पर से पर्दे उठाते हुए पंडित जवाहर लाल नेहरु ने लिखा है–
"उस समय हम कर्म के आवेगपूर्ण प्रवाह में आगे बढ़ते रहे, अस्पष्टता एवं तीव्रता के साथ लेकिन अपने लक्ष्य के बारे में स्पष्ट चिंतन का एकदम अभाव था। आज यह आश्चर्यजनक लगता है कि उस समय हम अपने आंदोलन के दर्शन, उसके सैद्धान्तिक पक्षों एवं अपने निश्चित उद्देश्य की कैसे उपेक्षा की। गांधी जी स्वय इस विषय पर अद्भूत रुप से अस्पष्ट थे और उन्होंने इसके बारे में स्पष्ट ढंग से सोंचने के लिए प्रोत्साहित भी नहीं किया। गांधी जी ने किसी समस्या को बौद्धिक ढंग से हल करने पर कभी जोर नहीं दिया, वे तो चरित्र और आचरण की पवित्रता पर जोर देते थे।"15
नेहरु जी के इस वक्तव्य के अनुसार नामवर जी ने आधुनिक हिन्दी काव्य का रहस्यवाद को तात्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक रहस्यवाद के अंग के रुप में माना है।
छायावाद स्वयं को रहस्यवादी प्रवृति तक सीमित नहीं रखता बल्कि यह सतत् जागरण की ओर प्रयाण करता है।
राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण जागरण की यही प्रवृति मोहनलाल महतो वियोगी ने भी अपनाई। 'निर्माल्य', 'एकतारा' एवं 'कल्पना' जैसी विशुद्ध छायावादी कविताओं के पश्चात् उन्होंने राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत आर्यावर्त जैसे महाकाव्य की रचना की। डॉ. नगेन्द्र ने अपने इतिहास ग्रंथ में इस महाकाव्य का उल्लेख करते हुए लिखा है– "मोहनलाल महतो वियोगी का आर्यावर्त भी इस युग का श्रेष्ठ ऐतिहासिक प्रबंध काव्य है, जिसकी रचना पृथ्वीराज और मोहम्मद गौरी संबंधी आख्यान के आधार पर हुयी है। इसमें 13 सर्ग हैं..... देशभक्ति की भावना इसमें सर्वोपरि रही है। वातावरण चित्रण की सजगता चरित्रांकन की यथार्थता, तत्सम शब्दों की प्रधानता और अनुकांत प्रवृति इसकी अन्य उल्लेखनीय विशेषताएं हैं।"16
कवि कर्म के संबंध में वे स्वयं लिखते हैं– "युग–धर्म के अनुरुप मानव भावनाओं में उतार–चढ़ाव का होना संभव है। कला हमारे जीवन के लिए है और जीवन कला के लिए है तथा अभेद भावना के द्वारा ही कला की चरम सिद्धि और उपलब्धि संभव है और यह

मानव और मानवता के लिए मुक्ति मार्ग है।"**17** आर्यावर्त की पंक्तियों में कवि द्वारा बताए गए मुक्ति मार्ग के चित्र स्पष्ट है–

साहस हो ! खोलो सीकड़ो को तलवार दो
सामने खड़े हो देखो क्षण भर में
बाजी लौट आती है महान आर्य देश की
मान जावें पंच हम, पाव भर लोहे को
दे दो शेष निर्णय का भार तलवार को।**18**

वृहत संख्या में काव्येतर रचनाओं के बावजूद वियोगी जी स्वयं को कवि के रुप में पहचाने जाने के इच्छुक रहे–

"इन कविताओं में मेरा है
ह्रदय छिपा खोजों हे प्राण
मेरे उदासीन जीवन का
कर लेना कारण संधान।"**19**

आर्यवर्त महाकाव्य में भारतीय आदर्श की झांकी प्रस्तुत करना ही कवि का परम उद्देश्य है। इसलिए आर्यावर्त के मुखपृष्ठ पर सिद्धान्त सूत्र के रुप में इन पंक्तियों को लिखा गया है–

"उदय हुआ है रवि दिव्य राष्ट्रधर्म का
आज राष्ट्रीयता ही श्रेष्ठ आर्यधर्म है।"**20**

इस महाकाव्य का नायक महाकवि चंद है इसके पूर्व किसी कवि को महाकाव्य का प्रधान चरित नायकत्व प्रदान नहीं किया गया है। नायक राजधानी दिल्ली को सम्बोधित करता है–

कह दो इसे हे राजलक्ष्मी, फेंक आरती
आगे बढ़ो लेकर कृपाण क्रुद्ध चण्डी सी
त्यागो यह भुवन–मोहिनी मधुरिमा
दूर फेकों केकण उतार फेंको किंकिनी
धो दो अंगराग जमुना की शांत धारा में
आंचल उतार के कसी माँ कति तट में
कूद पड़ो भूखी सिंहनी सी मृग झुण्ड में"**21**

कहाकवि चंद के माध्यम से कवि ने राष्ट्रीय भावना ओजपूर्ण वाणी दी है। देश काल एवं चरित्र विस्तार के साथ–साथ आर्यावर्त में कला और कल्पना का अद्भूत चमत्कार दृष्टिगत होता है।
इस प्रकार कहा जा सकता है कि महाकाव्य के रुप में आर्यावर्त एवं कवि के रुप में मोहनलाल महतो वियोगी की भूमिका भारतीय साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ

1. रामनिरंजन परिमलेन्दु, मोहनलाल महतो वियोगी– भारतीय साहित्य के निर्माता, साहित्य अकादमी, संस्करण 2010, पृष्ठ सं. –36
2. वही
3. मोहन लाल महतो वियोगी, आर्यावर्त, वियोगी साहित्य परिषद, सप्तम संस्करण 2011, पृ.सं.–1
4. हिन्दी काव्य का इतिहास–कबीर से रघुवीर, रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग इलाहबाद–211001, पृष्ठ संख्या–121
5. रामनिरंजन परिमलेंदु, मोहन लाल महतो वियोगी– भारतीय साहित्य के निर्माता, साहित्य अकादमी, संस्करण 2010, पृष्ठ सं. –58
6. हिन्दी काव्य का इतिहास, कबीर से रघुवीर , रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग इलाहबाद–211001, पृष्ठ संख्या–121
7. शिवदान सिंह चौहान, परिप्रेक्ष्य को सही करते हुए, वाणी प्रकाशन–409521, 'ए' दरियागंज नई दिल्ली, संस्करण–2012, पृ. 131
8. वही पृष्ठ– 131
9. रामनिरंजन परिमलेंदु ..... पृष्ठ संक्ष्या–54
10. रवीन्द्रनाथ टैगोर, गीतांजलि– राजपाल प्रकाशन, राजपाल एण्ड सन्ज़, 1990, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट– दिल्ली 110006, पृष्ठ संख्या–88
11. दृष्टि (त्रैमासिक पत्रिका), संपादक–डॉ. दिवाकर, मोहनलाल महतो वियोगी विशेषांक (45–46 जनवरी–सितंबर) 1991 पृष्ठ सं. –78
12. वही
13. महादेवी वर्मा, दीपशिखा, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2002, पृष्ठ सं.–35
14. वही, पृष्ठ संख्या–34
15. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण–1995, पृ. सं.–54
16. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स– 2010, पृ. सं.–627
17. दृष्टि (त्रैमासिक पत्रिका) ..... पृ. सं.–79
18. वही पृ. सं.–80
19. वही पृ. सं.–87
20. मोहन लाल महतो वियोगी, आर्यावर्त– वियोगी साहित्य परिषद्, रामसागर रोड़ गया, 61, पृ. सं. 1/21 पृ.स.–9 वही